इन्दिरा गान्धी राष्टोय कला केन्द्र
पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी
शास्त्र एवं प्रयोग

इन्दिरा गान्धी राष्टोय कला केन्द्र पूर्व क्षत्रीय केन्द्र, वाराणसी के द्वारा ''शास्त्र एवं प्रयोग'' कार्यक्रम के अन्तर्गत १५–१६ फरवरी २०१४ को 'छऊ' पारम्परिक शैली के आङ्गिक अभिनय एवं युद्धकला पर आधारित कार्यशाला तथा महाकवि भट्टनारायण प्रणीत 'वेणीसंहारम्' नाटक की प्रस्तुति की गयी, जिसका विवरण निम्नवत् है–

१५.०२.१४ को ३१ दिवसीय कार्यशाला (१६.०१.१४–१५.०२.१४) के समापन के अवसर पर इन्दिरा गान्धी राष्टोय कला केन्द्र पूर्व क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी के परामर्शदाता प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी न श्री शशधर आचार्य द्वारा प्रशिक्षित प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए नाट्यशास्त्र में वर्णित व्यायाम, पादस्थिति, गतिप्रचार, स्थानक, भङ्गिमा, हस्तमुद्रा, पदचालन एवं यद्धकला आदि तत्त्वों के बारे में विस्तार से बताया तथा कुछ प्रयोगों को कर के भी दिखाया। 'छऊ' शैली के विख्यात आचार्य श्री शशधर आचार्य नें अपन उद्बोधन में कहा कि भारतीय पारंपरिक परंपरा के पुनराविष्कार के लिए संस्कृत रंगमंच का प्रयोग आवश्यक है। दक्षिण में कुडियाट्टम द्वारा संस्कृत नाटक की परंपरा जीवित रही है। किन्तु उत्तर भारत मे इस कार्य को करने के लिए ओडिशा के 'छऊ' शैली पर आधारित प्रशिक्षण बहुत उपयोगी है। 'छऊ' में नाट्यशास्त्र में निरूपित रंग तत्त्व प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं और वे उत्तर भारत के भाषाओं के अनुकूल भी हैं। श्री शशधर आचार्य ने प्रशिक्षित प्रतिभागियों के द्वारा 'छऊ' शैली में व्यायाम, पादस्थिति, गतिप्रचार, हस्तमुद्रा, भङ्गिमा, एवं युद्धकला आदि तत्त्वों का प्रयाग भी कराया।

इस अवसर पर डॉ० एन० डी०शर्मा, अध्यक्ष, कलाकोश विभाग, इन्दिरा गान्धी राष्टोय कला केन्द्र, नई दिल्ली ने श्री शशधर आचार्य का सम्मानित किया। कार्यक्रम की समाप्ति प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में सुधीजन उपस्थित थे जिनमें डॉ० सुधीर लाल, डॉ० सुषमा जाटू प्रो० युगलकिशोर मिश्र, प्रा० कमल गिरि, डॉ० चन्द्रकान्ता राय आदि की उपस्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

आयोजन के दूसरे दिन ता० १६.०२.१४ को महाकवि भट्टनारायण प्रणीत 'वेणीसंहारम्' नाटक का मंचन हुआ। कर्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि उत्तर

प्रदेश संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष श्री शंकर सुहेल ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया। संस्कृत नाट्यपरंपरा के अनुसार नाटक की शुरुआत पूर्वरंग से हुई। कौरवों से द्यूत में पराजित पाण्डवों की ओर से भगवान् श्रीकृष्ण दूत बन कर पाँच गावों को देने का संधि प्रस्ताव लेकर दर्योधन के पास जाते हैं जिससे भीमसेन सहमत नहीं हैं तथा सहदेव से कहते हैं कि मैं आप लागों से अलग होता हूँ। इसी प्रकार छ: अङ्कों के इस नाटक में पाण्डवों द्वारा द्रौपदी को जुए में हार जाना, द्रौपदी के खुले बालों पर भानुमति का व्यंग्य करना, भोमसेन की दुर्योधन को मारने की प्रतिज्ञा करना, द्रोणाचार्य के मृत्यु की सूचना के उपरान्त अश्वत्थामा का मूर्छित होना, सभापति के मुद्दे पर कर्ण क साथ अश्वत्थामा का विवाद होना एवं अन्त में दुर्योधन को मारने के अनन्तर भीम की विजय गर्जना तथा द्रौपदी के केश संवारने के प्रसंग को श्री शशधर आचार्य के द्वारा प्रशिक्षित कलाकारों ने अपने अभिनय से जीवन्त कर दिया। इन सभी दृश्यों के मंचन के समय ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मानों महाभारत का दृश्य मूर्त्त हा गया हा। नाट्य मंचन के साथ–साथ गायन एवं वादन भी अत्यन्त प्रभावी रहा तथा समस्त सहृदय पक्षकों को प्रफुल्लित कर दिया।

कार्यक्रम की समाप्ति श्री शंकर सुहेल, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ के उद्‌बोधन तथा प्रो० कमलेश दत्त त्रिपाठी के धन्यवाद ज्ञापन से हुई। इस शुभ अवसर पर डॉ० एन०डी०शमा, डॉ० सुधीर लाल, डॉ०सुषमा जाटू, श्री शशधर अचार्य, प्रो० युगलकशोर मिश्र, प्रो० नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी, प्रो० कमल गिरि, श्रीमती विमला पोद्दार, प्रो० श्रीकिशोर मिश्र, प्रो० मनुलता शर्मा, प्रो० गोपबन्ध मिश्र, डॉ० सुकुमार चट्टोपाध्याय, डॉ० चन्द्रकान्ता राय, डॉ० वंदना पाण्डेय तथा काशी हिन्दू विश्वद्यिालय, सम्पूर्णानन्द संस्कत विश्वविद्यालय, महात्मा गान्धी काशी विद्यापीठ तथा अन्यान्य महाविद्यालयों के अध्यापक, छात्र–छात्राएँ एवं गणमान्य नागरिक दर्शक दीर्घा में उपस्थित रहे।

(रजनी कान्त त्रिपाठी)